॥ भाषा ॥

काशीमाहात्म्य

और

पञ्चक्रोशीयात्रा



बम्बई

टाइप में छपा ।

Siddheshwar Press Benares.

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीभाषा काशीमाहात्म्य.

एक समय नर्मदा के तीर पर बैठेहुए भृगुजी से लोमश आदि मुनियोंने पूछा कि हे भगवन् आप वेदों का सारांश निकाल कर, हमलोगों का अज्ञान दूर कीजिये। भृगुजी बोले कि जैसा कुछ मैंने पूर्व काल में सुना है उसे कहता हूं। कल्प के अन्तहोने पर फिर सृष्टि हुई। परब्रह्म ने देहलीला धारण की उनके नाभि से ब्रह्माजी उत्पन्नहुए। उन्होंने कमल में किसी को न देखा तब ईश्वर समझकर अहङ्कारी हुए, विष्णु ने उन्हें अज्ञानी जान वहां प्रगट हो उनसे पूछा कि तुम कौन हो? ब्रह्माजी बोले कि मे सृष्टि का मालिक हूं, नारायण बोले कि मेरेही

नाभि से उत्पन्न होकर मुझे भूल गए, मेरीही शरण लो। भृगुजी बोले ब्रह्मा और विष्णु का जब परस्पर झगड़ा होनेलगा उसी समय ज्योतिर्लिङ्ग प्रगट हुआ उसे देख ब्रह्मा और विष्णु ने विचारा कि यह कौन है उनको देखतेही दोनों के मनमें आया कि यही ईश्वर है तदनन्तर उनकी स्तुति की तब महादेवजी बोले कि ज्योतिर्लिङ्ग का दर्शन किया है इसलिये प्रसन्न हूं, जो चाहो मांगलो, वे दोनों बोले आपसे यही मांगते हैं कि आप में हमारी भक्ति हो महादेवजी बोले कि जो प्राणी यहां शरीर त्याग करेगा वह मुक्तहो जायगा चाहे कैसाहीपापी क्यों न हो इसक्षेत्र में मरने पर उसे मुक्ति अवश्य दीजाती है तुम दोनों को भक्ति होकर तत्वज्ञान मिलेगा इस तरह कहकर महादेवजी अन्तर्धान होगये, ब्रह्मा विष्णु भी ईर्षा छोड़कर विचारने लगे, हे मुनियों ! आप लोगोंने जो पूछा मैंने कहदिया वही लिङ्ग काशी कही जाती है, वहीं मुक्ति भी मिल

ती है, काशी को देखनेही से सब पाप नष्ट होजाते हैं, मुनियों ने कहा कि हे महाराज ! हम विस्तार से काशी की कथा सुनना चाहते हैं। भृगुजी बोले कि सत्ययुग में भूरिद्युम्न एक राजा था उसकी विभावरी पटरानी थी उसी के साथ पुष्पबाटिका में विहार कर ता था, अनन्तकाल इसी चाल से बितादिया राज्य की ओर दृष्टि नहीं दी थोड़ेही दिनों में शत्रु ने राज्य जीत लिया। राजा रानी विभावरी को साथ लेकर विन्ध्यपर्वत की ओर चल दिये खड्ग अपने पास रक्खा। पिपासा से पीड़ित हो रानी को साथ लिये घूमते २ भयङ्कर बनमें बहुत दिनों में पहुंचा। जगंल को देख रानी बोली कि हे महाराज! यह आपकी कौन अवस्था हुई जो मुझे साथ ले ऐसे बनमें आये इस में किस तरह रहा जाय यह जङ्गल तो जलसे रहित है पिपासा अभी से बाधा कररही है, राजाने अपना अपराध समझकर पिपासा से व्याकुल हो कुछ उत्तर न दिया

और दोनों बन में घूमते हुय १५ दिन के बाद सालं-
कायनमुनि के आश्रम में पहुंचे वहीं पर राजा ने एक
रात्रि बिताई दोनों फिर चले, कुकर्म से उस दिन कुछ
न मिला मुख सूखने लगा, तब दुष्टराजा की बुद्धि हुई
कि रानी को मार खाऊं इस बात को रानी ने जान-
लिया और कहा, क्षुधा आपके प्राण हरण किया चाहती
है, मेरे शरीर से मांस निकालकर खाइये ।विलम्ब न
कीजिये नारी का धर्म है कि पति का उपकार हो तो
प्राण त्यागकर भी करे । पापीराजा ने रानी को मार कर
उसके मांस का भोजन करना चाहा; अकस्मात् वहांपर
एकसिंह आपहुंचा उन्हें देख वह भागा मार्ग में चावलों
को काटते हुये ब्राह्मणों को खड्ग से मारडाला, उसी स-
मय यज्ञोपवीत मृगचर्म देख ब्रह्महत्या के भय से वहगिर
पड़ा और कहने लगा कि अपने प्राण के लोभ से
ब्राह्मण और अपनी रानी को मारडाला है, इसलिये
सौ कुल के सहित नर्क में गिरूंगा अब ऐसा करना

चाहिये कि ये सब भस्म होजाय ऐसा सालंकायनमुनि के पास आकर सब हाल कह सुनाया, मुनि ने कहा कि तू यहां से चला जा, फिर राजा के बहुत नम्र होने पर दयालु हो उत्तर दिया कि काशीपुरी को जा वहां जाने से तेरा पाप नष्ट हो जायगा, विश्वास के लिये काले वस्त्र पहनले काशी पहुंचेगा तो स्वच्छ हो जायंगे राजा ने वैसेही वस्त्र पहिन और सात दिन पर काशी के निकट आतेही उसके वस्त्र चन्द्रमा से स्वच्छ होगये, काशीपुरी का राजा ने देखी, देखा काशी का प्रभाव, कि ऐसा महापातकी काशी में आकर निष्पापहो काशीही में वास करने लगा मरने के उपरान्त मुक्ति को प्राप्त होगया। काशी में यदि पापी मरे तो नरक में नहीं जायगा, और "काशी" यह दो अक्षर का स्मरण करता हुआ कहीं शरीर त्याग करे उसे कैलाश मिलता है। पूर्वकाल में कुरुक्षेत्र में भालुकि का पुत्र अधर्मी पिंगाक्ष मुनि के आश्रम में खेल

किया करता था मुनिने कुश को साङ्गवेद विद्या पढ़ाई तिसपर भी उसको धर्ममें बुद्धि न हुई, बहुत समझाने पर भी उसकी मति न बदली जब उसकी युवावस्था आई तब वह अपने गुरू की नारी को लेकर मथुरापुरी को भागगया। दुष्ट उन्हीं के साथ विहार करता हुआ रात्री को सोना चुरा लाकर मदिरा पीता था। इसी चाल १२ वर्ष बिताए एक समय वह स्त्री मरगई तब दुःखित हो कलिंगदेश में घूमने लगा। वहां ज्वरसे पीड़ित हो बिचार करने लगा कि मैंने सिवाय पाप के पुण्य कभी भी नहीं किया मुझे परलोक में अच्छा नहीं होगा उसी समय काशी की कथा कोई उसे याद आई, जिससे मुख से 'काशी' ये दो अक्षरों को कह कर उसने प्राण छोड़ दिया। यमदूत आकर कुशको बांधने लगे, उसी समय शिवगण आकर उसे बिमान पर बैठाकर स्वर्ग को ले चले। यमदूतों ने कहा कि यह पापी क्या आप लोगों से छिपा है, इसे आप लोग कैसे लेने आये,

गणों ने उत्तर दिया यद्यपि वह बड़ा पापी है परन्तु मरने के समय "काशी" का नाम लिया इसलिये पाप से छूट कैलाश में युगभर रह फिर काशी में उत्पन्न हो मुक्त हो जायगा ऐसा कहकर उसे स्वर्गलोक में लेगये। दूतों ने जाकर यमराज से सब हाल कह सुनाया, यम-राज बोले कि मरते समय काशी में स्थित, वा काशी कहनेवाला, सत्तीर्थसेवी के हम स्वामी नहीं हैं।

महादेव जी, (ब्राह्मण, वा चाण्डाल, चाहे जिस जाति का हो) सभी भक्त को अन्त में तारक मंत्रो-पदेश करते हैं, किन्तु धर्मवान् को उसी क्षण में उ-पदेश देते हैं, काशी में जितने पाप किये जातेहैं उन्हें भोगने के लिये ३० हजार वर्ष रुद्रपिशाच होना पड़ता है, इसलिये काशी में भूलकर भी पाप न करे। काशी जानेके समय तिथिमुहूर्त का विचार न करे। काशी में थोड़ा भी दान करने से अनन्त फल होता है, यदि सुल-भ मुक्ति देनेवाली काशी है तो ऋषि मुनि आदि मु-

क्ति के वास्ते ध्यान, मनन, क्यों करते हैं ! उत्तर एक ही फल मिलने के लिये अनेक उपाय लिखे गये हैं, वह अपनी इच्छा के अनुसार उपाय किया जाता है परन्तु वाराणसी पुरी में जन्तु मात्र को शङ्करजी मुक्ति देते हैं । क्षेत्र के दर्शनमात्र से सब पातक नष्ट होजाते हैं । काशी में जैसे दान के फल का अन्त नहीं है वैसेही पाप के फल का भी अन्त नहीं है, इसके कहने से मालूम हुआ कि जो अधर्मी पिशाच होता है वह पहले नरक में जाकर पीछे पिशाच होता है या इससे विपरीत ? भृगुजी बोले कि उ० काशी में मरने वाले का यद्यपि यम मालिक नहीं हैं तौ भी पापी को कालभैरव अवश्य दण्ड देते हैं । काशी में पाप करने से जैसी बड़ी तीव्र यातना होतीहै वैसी यमराज भी यातना नहीं देते । काशी मे जो पातक छोटा वा बड़ा ज्ञानसे वा अज्ञानसे किया गया उसके भोगनेके लिये अयोनिज देह लेना प

डता है इसलिये काशी में रुद्रपिशाचता के भय से पातक भूल से भी न करे। प्र० काशी में शीघ्र मुक्ति होनी दुर्लभ है क्योंकि पाप से कौन खाली है। उ० यदि अज्ञान से स्वल्प पातक हो तो गंगास्नान शिव दर्शन से छूट जाता है। ज्ञान से भी कियाहो तो विश्वनाथजी के दर्शन से मुक्त हो जाता है। इसलिये त्रिकालगंगा मणिकर्णिका में स्नान करना पीछे विश्वेश्वर का दर्शन, अन्नपूर्णा ढुंढिराज और कालभैरव का पूजन करना चाहिये।

काशी के माहात्म्य को वेद भी नहीं कह सकते हैं और काशी में दरिद्री भी श्रेष्ठ हैं अन्यत्र सार्व भौम राजा भी श्रेष्ठ नहीं है, यदि कोई ब्राह्मण काशी में बसना चाहें तो उसे गृह, अन्न, वस्त्र, देकर बसाना चाहिये मणिकर्णिका में स्नान करके यदि विश्वेश्वर का दर्शन करे तो फिर गर्भबास नहीं होता अन्यत्र मरनेवाले का यदि श्रद्धासे श्राद्ध यहां किया जाय तो उसे कैलाशबास

होता है । यहां मरनेवाले मनुष्य सच्चिदानन्द स्वरूप होजाते हैं । एक ज्ञानवापी है जिसके जलके सेवन से ब्रह्मका साक्षात्कार होता है । मुनिं लोगोंने यज्ञ कठिन समझकर काशी में सुलभ मुक्ति होनेसे वहां ही अपना मन लगाया तब ब्रह्माजीने कर्म उच्छेद दे· खकर दश अश्वमेध यज्ञ काशी में शिवप्रीत्यर्थ किये महादेवजी ने ब्रह्मासे बर मांगनेको कहा ब्रह्माने कहा कि यज्ञ छोड़ देने से देवता जल नहीं देते, जिससे पृथ्वी सूखी जातीहै और प्रजा भूखी मरती है त्रिलोकका प्रलय असमय में हुवा चाहताहै इसलिये ऐसा उपाय कीजिये जिससे संसार नष्ट न हो । शिवजी ऐसा सुनकर ब्रह्मासे बोले कि मेरी पुरीमें भयकलह आदि विकार नहीं होते, काम अर्थ दंभमात्सर्य्य का त्यागकर धर्म मोक्षका विचारकर काशी का सेवन करना चाहिये यदि अधर्मी पापिष्टकाशीमें रहेंगे तो मगधसे कुछ काशी उनके लिये न्यून नहींहै इसलिये

धर्मिष्ट लोभही काशीका सेवन करें और उन्हींको मुक्ति मिलेगी महात्मा वेद व्यास कृष्णद्वैपायनभी महादेव से ईर्ष्या करने पर काशीसे बाहर कियेगये व्यासजी शिष्यों के साथ तीर्थों में स्नान कर विश्वेश्वर की पूजाकरके गौरी गणेशके दर्शनान्तर मुक्तिमण्डप (ज्ञानवापी) में आकर बैठे और पुरुषशक्तका पाठ करने लगे, उसी समय वेदव्यास के मध्यसे उनकी भक्ति देखनेके लिये अत्यन्त बुरा भेष बनाकर शिव जीने बीच मध्यसे निकलना चाहा । बहुतसे शिष्यों के कहने परभी वह बीचसे चलेही गये । तब व्यास जीने क्रोधसे शाप देनेकी इच्छाकी तब तक वह अन्तर्ध्यान होगये । तदनन्तर अत्यन्त सुन्दर वेषसे चन्द्रभूषण चन्द्र सूर्य, अग्निसे नेत्रबनाये हुए गौरीको साथलिये शिवजी प्रकट हुए उन्हें देख शिष्योंके सहित व्यासजीने उठ कर प्रणाम किया और स्तुतिकी । तब महादेवजी क्रोध करते हुए बोले हे व्यासजी! तुम काशी

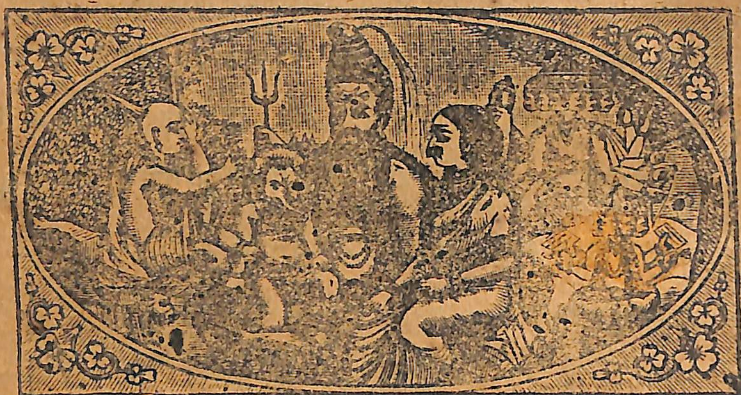
केबाहरचलेजाओ यहांनरहो रागीद्वेषियोंकाबास हमारी पुरीमें नहींहै और यह जानते हैं कि तुम हमारे भक्त हो इसलिये काशी के बाहर निकट रहकर जब राग द्वेषसे मुक्त होंगे तब फिर काशीमें बास पावोगे। मध्यमेश्वर से लेकर देहली बिनायक तक सूत्ररखकर चारों तरफ मंडलाकार घुमावे उसमें जो रेखाहो उसके बीच में काशीक्षेत्र जानना। उत्तर सीमापर बरुणा नदी. दाक्षिण सीमापर गंगा, पश्चिमी सीमापर पाशपाणिगणेश हैं उसके बीच में अबिमुक्त क्षेत्र हैं उसका मान विश्वेश्वर के चारों तरफ दो दो सौधनुष पर्यन्त है। अब विश्वनाथ के मन्दिर की सीमा सुनिये, पश्चिम गोरखगणेश, पूर्वमें गंगा उत्तर भारुभूति, दक्षिण में ब्रह्मज्ञानेश्वर हैं।

काशीक्षेत्र का माहात्म्य सुनने मात्रहीसे समस्तपाप नष्ट होजाते हैं जैसे रूईके पहाड़ को अग्नि की चिनगी भस्मकरती है। ईर्षा छोड़कर उसे सुनना

चाहिये, पाप को नाश करने के लिये यही परम तप है, ऐसा बिचार इसका पाठ करना चाहिये। भगवान महादेवजी मनोवाञ्छित फल अवश्य देते है।

॥ भाषाकाशीमाहात्म्य समाप्तः ॥





पञ्चक्रोसी यात्रा ।

साल में दोबेर यह यात्रा करनी चाहिये, काशी में किया हुआ पाप इस यात्रा से नष्ट होजाता है और काशीवासका फलमिलताहै। मणिकर्णिकायनमः । मणिकर्णिकेश्वरायनमः । सिद्धविनायकायनमः म० मणिकर्णिकाघाट । गंगाकेशवायनमः म० ललिताघाट ललितादेव्यैनमः म० तत्रैव । जरासिंधेश्वरायनमः म० मीरघाट । सोमेश्वरायनमः म० मानमन्दिर । दालभेश्वरायनमः म० तत्रैव । शूलटंकेश्वरायनमः दशाश्वमेध । आदिवाराहेश्वरायनमः म० तत्रैव । दशाश्वमेधेश्वरायनमः म० तत्रैव । बन्दिदेव्यैनमः म० तत्रैव । सर्वेश्वरायनमः म० पांडेघाट । केदारेश्वरायनमःकेदारघाट । हनुमदीश्वरायनमः म० हनुमानघाट। लोलार्कायनमः म० भदैनी । अर्कविनायकायनमः तत्रैव। संगमेश्वरायनमः म० असीसंगम । दुर्गाकुंडायनमः प्रथमनिवासस्थानम् । दुर्गाविनायकायनमः । दुर्गादेव्यैनमः म०तत्रैव। विश्वक्सेनश्व